



National Journal of Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177

NJHSR 2020 1(28): 209-213

© 2020 NJHSR

www.sanskritarticle.com

डॉ० पूनम सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
शम्भु दयाल पी०जी० कॉलेज,
गाज़ियाबाद

कृष्णा सोबती के कथा साहित्य में पितृसत्ता और स्त्री प्रतिरोध

डॉ० पूनम सिंह

शोध सार

भारतीय नारीवाद की बुनियादी ज़मीन पितृसत्ता के बरक्स एक ऐसी इम्पून् व्यवस्था है भारतीय समाज को स्त्री नजरिए से समाज को देखने की दृष्टि दी। स्वतंत्रता से पहले और बाद का स्त्री लेखन आज अपनी सशक्त उपस्थिति के कारण सर्वोच्च मुकाम पर स्थापित है। स्त्री लेखन से उठते स्वर ने चिंतन के स्तर पर स्त्री अस्मिता बोध को नव उभार दिया। महादेवी वर्मा, कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, उषा प्रियवंदा, मैत्रेयी पुष्पा इस्मत चुगताई, कुर्तलेन हैदर, अमृता प्रीतम जैसी लेखिकाओं ने साहित्य और समाज में तय लैंगिक राजनीति को न केवल तोड़ा; अपितु एक लेखक के रूप में अपनी केन्द्रीय जगह भी बनाई। इन लेखिकाओं के कारण ही आम स्त्री की स्वानुभूति, दुःख, संघर्ष को अभिव्यक्ति मिली। स्त्री लेखन के इन्हीं समवेत स्वरों ने स्त्री को भावनात्मक और मानसिक मजबूती दी और यह आत्मविश्वास भी कि परम्परा से चले आ रहे दोयम दर्जे के विशेषणों से अब स्त्री स्वत्व और उसकी अस्मिता को रेखांकित कर नकारा नहीं जा सकता।

स्वातंत्र्योत्तर कथा लेखन में कृष्णा सोबती का स्थान महत्वपूर्ण है। कृष्णा सोबती स्त्री को सम्पूर्ण मानवीय इकाई के रूप में चित्रित करती है। स्त्री देह विमर्श को केन्द्र में रखते हुए यौनिक मांग को जायज़ ठहराती हैं। उनकी स्त्रियां पितृसत्ता में रहते हुए अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व कायम रखती हैं। प्रेम के त्रिकोण में फंसी महकबानो और कुटुम्बप्यारी मन और देह के साथ वकील कृपानारायण के जायदाद पर बराबर अधिकार चाहती हैं। इतना ही नहीं, कृष्णा सोबती जीवन के सांध्य बेला में उगते प्रेम को पूरी शिद्दत के साथ महसूस कराती है। विभाजन, साम्प्रदायिकता, हिंसा की त्रासदी का सबसे ज्यादा शिकार स्त्रियां होती हैं। उनका समस्त कथा साहित्य स्त्री दमन की पारिस्थितिकी को ध्वस्त करता हुआ भारतीय स्त्रीवाद को पूरी बारीकी से परखता है।

पारिभाषिक शब्द: स्त्री अस्मिता, नारीवाद, पितृसत्ता, देह विमर्श, यौनिकता, स्वानुभूति, साम्प्रदायिकता, आधुनिकता।

मूल आलेख: भारतीय स्त्रीवाद पितृसत्ता की पारिवारिक, सामाजिक, नैतिक कंडीशनिंग और स्त्री संघर्षों से मिलकर निर्मित हुआ है। वैश्विक नारीवाद का असर दुनिया भर की प्रबुद्ध स्त्रियों पर पड़ा। लेकिन इसने अपनी ज़मीन और सैद्धांतिकी स्वयं तय की। भारतीय समाज और लोक ने स्त्री को पितृसत्ता के अनुकूलन के साथ गढ़ने की कोशिश की। लेकिन अनाम स्त्रियों ने लोकगीतों और साहित्य में अपना प्रतिरोध निरन्तर रचा। भारतीय स्त्रीवाद ने उन बर्बर रीति-रिवाजों की ओर उंगली उठाई है। जिन्हें हमारा समाज परम्परा के नाम पर धर्म, संस्कृति और संस्कारों का हवाला देते हुए स्त्री को कटघरे में खड़ा करता आया। आज की स्त्री पितृसत्ता की इस चालाकी और छद्म को समझ चुकी है। स्त्री और पुरुष दोनों दुनिया को अलग-अलग नजरिए देखते हैं। यह दृष्टि-भेद जैविक से ज्यादा सामाजिक-सांस्कृतिक-आर्थिक व्यवस्था से भी उत्प्रेरित है। कन्या भ्रूण हत्या, बलात्कार, हत्या, घरेलू हिंसा, स्त्री दमन जैसे मुद्दे स्त्री अस्मिता विमर्श के केन्द्र में आये।

आधुनिक नारीवाद की जननी ब्रिटिश लेखिका और दार्शनिक मैरी वोल्स्टोन क्राफ्ट के हवाले से कहे तो “स्त्री प्रज्ञा, बुद्धि में पुरुषों से कमतर नहीं, स्त्री को देह के रूप में देखने की ज़िद तो पुरुषों की रही है। ताकि वह उस पर शासन कर सके”। इस तथ्य को स्त्री आन्दोलनों में बार-बार रखा गया। विडंबना है।

Correspondence:

डॉ० पूनम सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
शम्भु दयाल पी०जी० कॉलेज,
गाज़ियाबाद

कि आज भी सामंती समाज स्त्री को भोग्या और पूंजीवादी सभ्यता उसे देह की जड़ में ही समेटती रही। इस कथ्य ने साफ़ तौर पर स्त्री के हक़ में यह नज़रिया दिया कि स्त्री भी पुरुष की तरह मनुष्य है, नागरिक है। वह पुरुष निर्भर यौनिक इकाई या 'अन्या' नहीं है।

स्त्रीवाद की सैद्धान्तिकी गढ़ने वाले स्त्री लेखन ने इस बात पर ज़ोर दिया कि जेंडर केंद्रित पितृसत्तात्मक व्यवस्था का स्त्री नजरिए से पुनर्परीक्षण, पुनर्मूल्यांकन किया जाना चाहिए। अतः स्त्रियों ने अपने लेखन में कथ्य के स्तर पर स्त्रीपन को रचा और उसका वैचारिक धरातल पर विश्लेषण भी किया। विचारणा के इस प्रयोग ने स्त्री लेखन को आलोचना के नये प्रतिमान दिए। पितृसत्ता के विरुद्ध इस बौद्धिक विद्रोह ने साहित्य में क्रांतिकारी बदलाव किये। नवजागरण से लेकर समकालीन स्त्रीवाद इन्हीं क्रमिक चक्रों में निर्मित और प्रसरित हुई। महादेवी वर्मा ने 'शृंखला की कड़ियाँ' (सन् 1942) में भारतीय स्त्री की दोगुनी सामाजिक स्थिति, लैंगिक भेदभाव को निबंधों में व्यक्त किया। महादेवी वर्मा सीमोन द बुआ के 'द सेकेंड सेक्स' से पहले भारतीय नारीवाद को आकार दे रही थीं। वे लिखती हैं कि "वे (स्त्रियाँ) शून्य के समान पुरुष की इकाई के साथ सब कुछ हैं, परन्तु उससे रहित कुछ नहीं उनके जीवन के कितने अभिशाप उसी बंधन से उत्पन्न हुए हैं, इसे कौन नहीं जानता" (1) जिस दौर में भारतीय स्त्रियाँ पराश्रित जीवन की विडम्बना से बाहर निकलने की हिमाकत नहीं कर पा रही थी ऐसे वक्त में महादेवी वर्मा स्त्रियों की शिक्षा, समानता, अधिकारों के प्रति जागरूक कर रही हैं- "भारतीय नारी जिस दिन अपने सम्पूर्ण प्राण-आवेग से जाग सके उस दिन उसकी गति रोकना किसी के लिए संभव नहीं उसके अधिकारों के सम्बंध में यह सत्य है कि वे शिक्षा वृत्ति से न मिले हैं, न मिलेंगे.... समाज में व्यक्ति का सहयोग और विकास की दिशा में उसका उपयोग ही उसके अधिकार निश्चित करता रहता है किन्तु अधिकार के इच्छुक व्यक्ति को अधिकारी भी होना चाहिए सामान्यतः भारतीय नारी में इसी विशेषता का अभाव मिलेगा कहीं उसमें साधारण दयनीयता और कहीं असाधारण विद्रोह है, परन्तु संतुलन से उसका जीवन परिचित नहीं" (2)

स्वतंत्रता पश्चात कथा केन्द्रित नई कहानी आन्दोलन ने हमें उषा प्रियंवदा, मधू भंडारी, कृष्णा सोबती जैसी लेखिकाएं दिये। इनमें कृष्णा सोबती का स्वर सबसे अधिक विद्रोही रहा। उनका कथ्य अनायास ही नारीवाद का भाष्य रचता है। कृष्णा सोबती अपनी पहली औपन्यासिक कृति "डार से बिछुड़ी" (1958), से लेकर "मित्रो मरजानी" (1966), सूरजमुखी अंधेरे के (1972), ज़िंदगीनामा (1979), दिलों दानिश (1993), समय सरगम (2000), जैनी मेहरबान सिंह (2007), गुजरात पाकिस्तान गुजरात हिन्दुस्तान (2017), चन्ना (2019) तक स्त्री सच के विविध पार्श्वों को अन्वेषित कर रचती रही।

कृष्णा सोबती के लेखन में नारीवादी चिंताएं प्रमुख रही हैं। नारीवाद शब्द का संबंध नारी मुक्ति से है। कृष्णा सोबती की दृष्टि में

नारी मुक्ति रुढ़िवादी परम्परा के बंधनों से मुक्ति मात्र है। उनका स्त्रीवाद स्त्री के हक़ में गतिशील और निरंतर परिवर्तित होने वाली विचारधारा है। जो आधुनिक से उत्तर आधुनिक होते नये समाज और परिवार के साथ स्त्री को समझने का हमें सलीका देता है। 'डार से बिछुड़ी' (1958) उनका पहला उपन्यास विभाजन, युद्ध, हिंसा से त्रस्त सामाजिक व्यवस्था में पितृसत्ता के क्रूरतम अत्याचारों की शिकार हुई पाशो की दुखद गाथा है माता-पिता के ममत्व और संरक्षण से वंचित पाशो की तरुणाई मामा-मामी की प्रताड़ना में बीतता है। उसकी विधवा मां घर से भागकर शेख से शादी कर लेती है। पाशो बचपन से मां की चरित्रहीनता का ताना सहती है। वह करीम से आशनाई के अफवाह में पिटती है और कोठरी में कैद कर दी जाती है। पाशो पर सख्त पहरा, जोड़ मेले में पाशो को ठिकाने लगाने की साज़िश- ये कुछ कारण थे जो पाशो को डार से बिछुड़ने के लिए विवश करते हैं। पितृसत्ता घर से भागी पाशो को आश्रय भी अपनी शर्तों पर देता है, शर्त स्त्री अपमान, दैहिक, मानसिक शोषण और उसे बद से बदतर ज़िन्दगी का खौफ। ताकि स्त्री उसके द्वारा तय लक्ष्मण रेखा लांघ न पाए। राजेन्द्र यादव इस उपन्यास के बारे में लिखते हैं "पाशो माने व्यक्ति नहीं, चीज है, पशु है- जिसे जो मन हो उठाकर ले जाए, जहां है वहां उसका घर संभाले, बिस्तर गर्म करे और वंश चलाने के लिए संतान दे... पाशो है कि पिछले को छाती से चिपकाए जहां है वहां की खैर मनाती रहे....चाहे दीवान जी की मौत हो, या खालसों की अंग्रेजों से लड़ाई की बजती तुरहियां....उसे तो बांदी, बीबी या बहन कुछ भी बन कर रहना है और जान बचाने के लिए पशु की तरह इस घर से उस घर भागना है या खरीदी-बेची-छीनी जाकर एक से दूसरे को सौंपे जाना है" (3) विधवा पाशो, छुन्ना जैसी स्त्रियाँ आर्थिक पराधीनता के कारण आजीवन मानवीय गरिमा पाने के लिए संघर्ष करती हैं।

कृष्णा सोबती चेतना के धरातल पर स्त्री-पुरुष के लैंगिक पूर्वाग्रहों से मुक्त उसे समभाव, मैत्री भाव के आधार पर देखे जाने की आकांक्षा रखती है। चाहे वह "मित्रो मरजानी" की मित्रो हो या "समय सरगम" की आरण्या। उनकी दृष्टि में स्त्री और पुरुष आदिम मित्र हैं। शारीरिक- मानसिक रूप से दोनों एक-दूसरे के पर्याय भी। फिर पुरुष और स्त्री दैहिक डिजायर को लेकर विभेद क्यों? वे 'मित्रो मरजानी' में मित्रो के माध्यम से स्त्री के यौनिकता की मांग को मुद्दा बनाती हैं। मित्रो प्रेम को अशरीरी नहीं मानती। उसके लिए प्रेम शारीरिक और मानसिक दोनों ही तरह के आनन्द का साधन है। मित्रो जब पति सरदारीलाल की शारीरिक अक्षमता की वजह से इस संतुष्टि को हासिल नहीं कर पाती तो उसका मन विद्रोह कर उठता है। वह कहती है, "जिठानी, तुम्हारे देवर-सा बगलोल कोई और न दूजा होगा। न दुःख-सुख, न प्रीति-प्यार, न जलन-प्यास....बस आये दिन धौल-धप्पा....लानत-सलामत!" (4) मित्रो को सरदारीलाल से प्रेम तो है लेकिन सरदारीलाल की शारीरिक अक्षमता तथा मित्रो के मन से सामंजस्य न स्थापित कर पाना, कुछ

ऐसी वजहें हैं जिनके कारण मित्रो और सरदारीलाल के बीच अकसर तनाव रहता है। मित्रो तब प्रेम के अन्य विकल्पों के बारे में सोचने लगती है। वह अनेक पुरुषों के विषय में अपनी कल्पना में सोचते रहती है और सास या जिठानी की झिड़कियों का भी उस पर कोई असर नहीं होता। अनामिका के अनुसार, “मित्रो का लिबिडो देह की चट्टान से उत्ताल तरंगों में टकराता समुन्दर है और वह जो सोचती है- उसकी थिरकन, उसकी ऊँच-नीच सब भाषा में सीधी छन जाती है।”⁽⁵⁾ मित्रो की यौनिक चेतना भारतीय नैतिकता को धृता दिखाती है। पितृसत्ता स्त्री देह को कथित रूप से नियंत्रित करता है। लेकिन मित्रो विवाह संस्था के माथे पर शिकन लाती और दिक्कत तलब सवाल ठोकती है- **“जिन्द जान का यह कैसा व्यापार? अपने लड़के बीज डालें तो पुण्य, दूसरे डालें तो कुकर्म।”**⁽⁶⁾ “मित्रो मरजानी” के माध्यम से वह सवाल उठाती हैं कि यौन शुचिता के नाम पर एक स्त्री ही अपनी दैहिक इच्छाओं की बलि क्यों दें मित्रो मरजानी” का देह विमर्श या यौनिकता स्त्री अस्मिता का केन्द्र है।

स्त्री के प्रति सबसे घृणित और कठोरतम अपराध बलात्कार है कृष्णा सोबती के उपन्यास **“सूरजमुखी अंधेरे के”** की रतिका (रत्ती) बचपन में यौन शोषण की शिकार हुई। वह अपने खंडित बचपन के कारण आजीवन पथराती संवेदनाओं के लिए स्नेह का ताप चाहती है। ‘सूरजमुखी अंधेरे के’ उपन्यास प्रतीकात्मक रूप से ‘पुल’, ‘सुरंगे’ और ‘आकाश’ तीन भागों में बंटा हुआ उपन्यास ‘पुल’ भाग में, सोबती बलात्कार के बाद रत्ती के बचपन और युवावस्था के शुरुआती वर्षों का वर्णन करती हैं। ‘सुरंगे’ में, पुरुषों के साथ रत्ती के कई निराशाजनक अनुभवों और रिश्तों का वर्णन है, जिसके कारण वह मुरझाई हुई और कड़वी अवस्था में पहुँच जाती है। ‘आकाश’ में, पुरुष मित्र दिवाकर के संसर्ग में यौनकुंठा से मुक्त होकर सामान्य स्त्री होती है ये तीनों भाग रत्ती के मानसिक विकास के चरण हैं। रत्ती का कथन है “ वह एक काला जहरीला क्षण हर बार मुझे झपट लेता है और मैं काठ हो जाती हूँ ”⁽⁷⁾ बलात्कार के गहरे आघात से आहत रत्ती न केवल ‘फ्रिजिड’ हो जाती है बल्कि अत्यन्त असहिष्णु और क्रूर औरत बन जाती है भारतीय समाज में बलात्कार की शिकार स्त्री को लगातार अपराधबोध और शर्मिंदगी का अनुभव कराया जाता है जैसे स्त्री ही बलात्कार की असली वजह हो बाल यौन शोषण, यौन हिंसा के वर्तमान परिदृश्य में यह उपन्यास स्त्री मनोविज्ञान के नये धरातल पर स्त्री विमर्श को विश्लेषित करता है कृष्णा सोबती के उपन्यासों में स्त्रियाँ पारंपरिक समाज की पितृसत्तात्मक संरचना को चुनौती देती हैं उनके पात्र समाज के नियमों के खिलाफ जाकर अपनी आइडेंटिटी बनाते हैं समाज के नियमों को बदलने की कोशिश करते हैं

कृष्णा सोबती ने प्रेम और विद्रोह को अपने सृजन का बीज शब्द बना लिया है। **‘दिल ओ दानिश’** विवाहेतर संबंधों के पुंसवादी नजरिए का स्त्रीवादी तरीके से उत्तर देता उपन्यास है। **‘दिल ओ दानिश’** दो भिन्न धर्मों, पीढ़ियों के बीच स्त्री-पुरुष सम्बन्धों को पारिवारिकता के स्तर पर व्याख्यायित करता है। प्रेम संबंधों के नये ध्रुवीकरण और मायने को जांचने परखने का काम करता है। आरम्भ में महक एक समर्पिता है और वकील साहब से उसके प्रेम संबंध

अत्यंत मधुर हैं। इसी प्रेम संबंध के परिणामस्वरूप महक दो बच्चों बदरू और मासूमा की माँ भी बनती है। लेकिन जब वकील साहब बदरू के जन्मदिन पर दिए गए कंगन उससे वापस माँग लेते हैं और मासूमा के विवाह के मौके पर उसे माँ की हैसियत से वंचित रखते हैं। तब लेखिका इस उपन्यास में स्त्री हक्क का वह निर्णायक क्षण उपस्थित करती हैं – जिसमें महक बानो वकील साहब की मनाही के बावजूद बेटी की शादी में उपस्थित होती है। वकील साहब द्वारा अधिगृहीत उसकी माँ नसीम बानो के गहने हक्क से मांगकर सबके समक्ष बेटी को देती है- **“....हमारी माँ के जेवर हमें आज शाम तक मिल जाने चाहिए वकील साहब। आप अम्मी के वकील रहे, अब हम आपकी मुवक्किल की बेटी हैं जिसका उन पर पूरा हक्क है।”**⁽⁸⁾ वह वकील द्वारा अपने बच्चों से दूर किये जाने पर खाँ साहब के रूप में प्रेम की नयी संभावनाएँ भी तलाशती हैं। यह उपन्यास त्रिकोणीय प्रेम की सामाजिकी को नये संदर्भों में देखने की मांग करता है और स्त्रीवाद के अनेक प्रमेयों को छूने का प्रयास करता है।

कृष्णा सोबती की **‘ऐ लड़की’** नारी मन के गूढ़ रहस्यों और अनुभूतियों से गुजरने की कथा है। जो स्त्रीवाद को सूक्तियों में सूत्रबद्ध करता है। उनके पास आधुनिकता की संवेद्य दृष्टि है। जिससे वे समूचे सामाजिक परिदृश्य को एक आलोचनात्मक दृष्टि से देखती हैं। अकेलापन- **‘ऐ लड़की’** का कथ्य है। उस अकेलेपन में दो पीढ़ियाँ भारतीय परिप्रेक्ष्य में स्त्रीवाद पर सुविचारित, अनुभव जनित तरीके से विचार करती है। अम्मू मृत्यु शैय्या पर है- उसने भरा पूरा जीवन जिया है। वह स्मृतियों के झरोखे से विगत को देख रही है। उसमें गहरी जिजीविषा है। वह मृत्यु भय से परे है। यह उसी अम्मू की कथा है जो नित कही जाकर भी पुरानी नहीं हुई है। यह हर स्त्री की कथा है जो व्यक्ति के रूप में अपनी पहचान दर्ज करने के लिए आकुल है। **‘ऐ लड़की’** में माँ-बेटी अपना स्वत्व खोकर परिवार और सम्बन्ध नहीं चाहती। प्रेम में स्त्री के व्यक्तित्व के तिरोहित हो जाने का अस्वीकार ही कृष्णा सोबती के लेखन को विशिष्ट बनाता है। **‘ऐ लड़की’** की नर्स सूसन को अम्मू समझाते हुए कहती हैं कि “सूसन, शादी के बाद किसी के साथ का झुनझुना नहीं बनना। अपनी ताकत बनने की कोशिश करना।”⁽⁹⁾ **‘ऐ लड़की’** में एकाकीपन के दो छोर हैं- अम्मू की वृद्धावस्था का एकाकीपन और लड़की द्वारा स्वतंत्र जीवन जीने से उद्भूत एकाकीपन है। जहाँ यथार्थ के धरातल पर अम्मू समष्टिगत जीवन शैली की समर्थक है तो वहीं लड़की व्यक्ति के तौर पर नारी चेतना को परिभाषित करती है। अम्मू जीवन को उत्सव की तरह जीने में विश्वास रखती है। जो भारतीय दर्शन का प्रतिनिधित्व करता है। पुनर्जन्म में आस्था रखती है। लड़की नयी चेतना से युक्त है। व्यक्ति स्वातंत्र्य उसके जीवन का मूल मंत्र है। अम्मू लड़की के अकेले जीवन की आलोचना करती है। वह चाहती है कि लड़की समाज से भी जुड़ी रहे- एक जागरूक और सचेत स्त्री के रूप में। अम्मू केवल अपने अतीत को नहीं देखती, बल्कि समाज की परम्पराओं, रिवाजों और मिथकों का भी आलोचनात्मक मूल्यांकन करती हैं अम्मू और उनकी बेटी के बीच चलता संवाद कविता सा बहता है, जो जीवन के गहरे अर्थों को

छूता है 'ऐ लड़की' की अम्मू महाभारत की कुंती और कर्ण के मिथक को नए नजरिए से देखती है 'ऐ लड़की' में निहित कृष्णा सोबती का स्त्रीवाद स्त्री जागरूकता का दस्तावेज है।

प्रेम जीवन को आवेगमयता देता है। उनके यहां प्रेम जीवन संगीत की लय भी है और उम्र को दो छोरों पर बांध लेने की साधना भी- यौवन का प्रेम आरोह है तो वृद्धावस्था का प्रेम अवरोह। उनका उपन्यास समय सरगम इसी राग का प्रेमाख्यान है। प्रेम की लय जीवन के उत्तरार्ध में भी अभीष्ट है। समय-सरगम के अरण्या और ईशान अपने लिए अकेलापन, अपनों की उपेक्षा, प्रताड़ना के बजाए प्रेम के इस संगीतमय लय को चुनते हैं। एक दूसरे के पूरक और पर्याय बनकर। अरण्या तन से वृद्ध भले ही हो, मन की हुलासें अभी भी यौवन वाला है- " निःशब्द है समय, पर इसमें भी बहुत कुछ धड़क रहा है "(10)

समय सरगम वृद्ध जीवन का आख्यान है। घर-परिवार के ध्वस्त होते सामाजिक और भावनात्मक ढांचे ने वृद्धों को अनुपयोगी बना दिया है। प्रभु दयाल और दमयंती अपने-अपने बहु-बेटों के साथ रहते हुए भी अकेले हैं। आत्मनिर्भर कामिनी का कोई परिवार नहीं है। वह अकेली नौकरानी के साथ रहती है। सगे भाई के लालच में उसे अपनी प्रोपर्टी से हाथ धोना पड़ता है और भाइयों के कहने पर डाक्टरों द्वारा स्लो पाइजनिंग देकर मरने के लिए छोड़ दिया गया। आत्मनिर्भर सफल उद्यमी प्रभु दयाल भी अपनी मौत नहीं मरते। पोस्टमार्टम रिपोर्ट में गला घोटने की बात आई। दमयंती परिवार की अनदेखी से मरती है। इस तरह वृद्धों के लिए परिवार ही सबसे बड़ा खतरा है। लेकिन ईशान और आरण्या अपने लिए नए तरह परिवार की परिकल्पना करते हैं। जिसकी सामाजिकता वासना रहित दो विपरीत लिंगी के विशुद्ध मैत्री भाव पर टिकी है। सत्तर वर्षीया युवामन आरण्या और विधुर ईशान ऐसे चरित्र हैं जो अपनी उम्र और मृत्यु के विरुद्ध लड़ते हैं। भिन्न अभिरुचियों, स्वभाव के बावजूद दोनों के सहजीवन का यह सांझापन एक दूसरे का पूरक बनाता है। आरण्या का कथन है कि "कितने बरस गुजर गए। हम कहां से चले थे और कहां पहुंच गए। कहां मालूम था कि पतझर के इस मौसम में हम लोग मिल जाएंगे पुराने परिचितों की तरह नहीं- नए मित्रों की तरह।"(11)

आरण्या अन्य वृद्धों की तरह परिवार के मोहजाल, भ्रम और मृत्यु बोध से ग्रस्त नहीं होती। वह अपने उत्तर जीवन को अपनी मर्जी से अपनी शर्तों पर जीती है- "...और उम्र ? वह बकरी बनी चर रही है धीरे-धीरे। चरने दो उस ओर मत देखो "(12)

कृष्णा सोबती के लेखन में विभाजन त्रासदी और स्त्री के केन्द्र में रहें हैं। उनके तीन उपन्यास 'जिन्दगीनामा', 'गुजरात पाकिस्तान से गुजरात हिन्दुस्तान' और 'चन्ना' विभाजन पर लिखी क्लासिक रचनाएं हैं। 'जिन्दगीनामा' साम्प्रदायिकता, धार्मिक कट्टरवाद के विरुद्ध लिखी गई अब तक की रचनाओं में मील का पत्थर है। अविभाज्य पंजाब भूमि की महान गाथा के रूप में- इसकी समृद्धि परम्पराएं, मिथक और किंवदंतियां, लोक जीवन इसे महत्वपूर्ण बनाता है।

इसी तरह गुजरात पाकिस्तान से गुजरात हिन्दुस्तान उपन्यास विभाजन त्रासदी की पृष्ठभूमि में विलय होते रियासतों, टूटते दरकते राजशाही, सामंती मूल्यों की कथा-व्यथा है। गुजरात पाकिस्तान से गुजरात हिन्दुस्तान उसी कटे-छंटे-बंटे भूगोल की महागाथा है जिसकी सरहदों के बनते-बिगड़ते इतिहास, भूगोल पर लाशों से भरी रेलगाड़ियां और विस्थापितों के उमड़ते हुजूम और कैम्प से भरे पड़े हैं। विभाजन सदी का सबसे त्रासद और दुःखद घटना क्यों है? इसका उत्तर यहां हमें मिल जाता है। इस आत्मकथात्मक उपन्यास की लेखिका विभाजन की त्रासदी की भोक्ता और प्रत्यक्षदर्शी दोनों रहीं। लेखिका जिसका जन्म गुजरात पाकिस्तान में हुआ। जिसे बंटवारे के बाद लाहौर से दिल्ली होते हुए हिन्दुस्तान गुजरात के सिरोही रियासत में महाराज तेज सिंह के गर्वनैस की नौकरी के लिए करनी पड़ी। पाकिस्तान का गुजरात स्मृतियों का गुंजलक है। जिसके किरदार गाहे-बगाहे तैरते हुए आते-जाते रहते हैं। वहां की जगहें, लोग स्मृतियों में ही बुलाएं, पुकारे जाते हैं। वे जिस तरह से छटपटाते हुए आते हैं, उसी तरह बेचैन करके चले जाते हैं। उनकी कोई ठोस जमीन यहां नहीं है। अगर है तो हिन्दुस्तान गुजरात के शरणार्थी की। उपन्यास में वर्णित स्मृतियों के दुस्वप्न, दंश हमें विगलित और जड़ीभूत करते हैं। इसमें विभाजन का दर्द बयानगी के क्रतरे-क्रतरे रिसता हुआ दर्ज हुआ- "....उसने दुपट्टे के छोर से आंखें पोंछी और सपनों को पाकिस्तान की ओर धकेल दिया। सपनों जाओ वहीं जाओ यहां भेस बदलकर यहां वहां ताक-झांक करने से क्या फ़ायदा? अब मेरी ओर से कोई उधार तो बाकी नहीं...."(13)

राजनीतिक स्थितियां इंसान को कैसे मोहरा बनाती है। इसका जिक्र यहां है- "अब तो हम तेज़ किए हुए चाकू हैं। हम आग का पलीता हैं। हम दुल्हनों की बांहें काट देने वाले टोके हैं। हम गंडासे हैं। अब हम हम नहीं हैं, हथियार हैं।"(14)

उपन्यास की मूल कथा गुजरात पाकिस्तान से ज्यादा हिन्दुस्तान गुजरात पर केंद्रित है।

उपन्यास में बेदखली की अंतर्ध्वनि बहुत सघन और सांद्र है- "सारा शहर भरा है अपने अपने घरों से फेंके गए वजूदों से। इंसानी चिथड़ों से।"(14) महाराज तेज सिंह जो बालक हैं- "एक बच्चा जो भारत के अतीत, वर्तमान और भविष्य के बीच सहमा खड़ा अपनी शिक्षिका से पूछ रहा था- मैम बेदखल का मतलब क्या होता है?"(15) बंटवारे, दंगे, बर्बर हिंसा का सबसे ज्यादा शिकार स्त्रियां होती हैं। उन ख़ौफनाक स्थितियों ने उनकी स्त्रियों को जीवट और अदम्य जिजीविषा शील बनाया है। चाहे उसकी पृष्ठभूमि अविभाजित पंजाब की हो या अविभाजित गुजरात की हो- उनके इन दोनों उपन्यासों में स्त्रीवादी स्वर के साथ गहरी आंचलिकता भी है।

चन्ना कृष्णा सोबती का पहला उपन्यास था। लेकिन छपा आखिरी उपन्यास के रूप में। अविभाजित पंजाब के एक बड़े जमींदार शाह जी की एकमात्र बेटी शीला से चन्ना का जन्म होता है। मां शीला

चन्ना के जन्म के दस दिन बाद ही मर जाती है। शीला के जीवन का दुखद पक्ष उसका वैवाहिक जीवन रहा। चन्ना के पिता धर्मपाल स्यालकोट के बड़े व्यापारी हैं वह व्यापार के सिलसिले में बम्बई जाते हैं। लेकिन जब लौटते हैं तो मॉडर्न स्त्री श्यामा के साथ दूसरा विवाह करके लौटते हैं। एक ही घर के दो मंजिल में बंटे जीवन ने शीला को भीतर ही भीतर तोड़ दिया। शीला जानती थी कि पति-पत्नी के रिश्ते में सब कुछ पहले जैसा नहीं रह गया और न रहेगा। शीला के न रहने पर चन्ना की नाना-नानी ने ही परवरिश की। सामंती व्यवस्था में पिसती स्त्री शीला की व्यथा-कथा के बीच चन्ना आत्मबोध, स्वाभिमान से युक्त दृढ़ युवती की कथा है। कृष्णा सोबती का लेखन स्त्रियों के प्रति अपनाए गए दोहरे मानदंड के विरुद्ध हमेशा रहा। उनका यह विद्रोह पितृसत्तात्मक व्यवस्था, घरेलू पारिवारिक सत्ता से होते हुए बाद में व्यापक परिप्रेक्ष्य में फांसीवाद और साम्प्रदायिकता तक विस्तृत हुआ।

निष्कर्ष: कृष्णा सोबती के कथा साहित्य में नारीवाद के जो मुख्य बिंदु दिखाई देते हैं- दमनकारी पितृसत्ता का विरोध, स्त्री अस्मिता, साम्प्रदायिकता के अमानवीय स्थितियों के प्रति प्रतिरोधी स्वर, शोषण की बदतर हालातों के बीच में भी अदम्य स्त्री जिजीविषा, लैंगिक समानता, लैंगिक संवेदीकरण, देह मुक्ति, घरेलू हिंसा, यौन-हिंसा, आर्थिक आत्मनिर्भरता का समर्थन आदि। उनका ज़ोर विवाह जैसी संस्था को बरकरार रखते हुए उसके स्त्री ध्वंसक स्वरूप में आवश्यक सुधार करना और एक स्त्री को मानवी रूप से जीने का हक प्रदान करना है।

संदर्भ ग्रंथ और अन्य श्रोत

1. बर्मा महादेवी: शृंखला की कड़िया, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, तीसरा संस्करण 2008, पृष्ठ: 94
2. पुनरोक्त, पृष्ठ सं०9
3. यादव, राजेन्द्र(2000), आदमी की निगाह में औरत, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ०128
4. सोबती कृष्णा, मित्रो मरजानी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2004, पृ०18
5. अनामिका, अंतःप्रज्ञा का ऐन्द्रिक विस्तार, शताब्दी कथा-साहित्य, पृ०376
6. सोबती कृष्णा, मित्रो मरजानी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2004, पृ०35
7. सोबती कृष्णा, सूरजमुखी अंधेरे के, राजकमल प्रकाशन पेपर बैक्स, दिल्ली, पृ०14

8. सोबती कृष्णा: दिलोदानिश, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण:2006, पृष्ठ-204
9. सोबती कृष्णा: ऐ लड़की, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण: 1991, पृष्ठ-06
10. सोबती कृष्णा: समय सरगम, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण: 2000, पृष्ठ:20
11. सोबती कृष्णा: समय सरगम, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण: 2000, पृष्ठ:147
12. पूर्वोक्त, पृष्ठ: 20
13. सोबती कृष्णा: गुजरात पाकिस्तान से गुजरात हिन्दुस्तान, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण: 2017
14. पूर्वोक्त
15. पूर्वोक्त